

ॐ नमः धीनरेश्वराय ।

नान्दो गीत ॥ चो ॥

प्रथमहि सुमरने गुरु गणेश ।
देव अभय वर हरय कलेश ॥
कर तिरशूर डगर मणि हार ।
प्रेम धरिअ शिव अरधङ्ग दार ॥
नदि भृङ्ग सङ्ग निरित बिहार ।
ओहि इसर, मुंदर बाध छाल ॥
चौद तिलक अथा निरमल गङ्ग ।
विभूवन ठाकुर भुवरा भुजङ्ग ॥
तोहहि सोहाओन मोर मने भाव ।
जगत प्रकाश भूप कौतुके गाव ॥

(श्लोकः)

तनुताम्रदीपितजटास्रपल्लवो, धृतबालभालविधुपुष्पमालयकः ।
हरमौलिमङ्गलधरो घटेत वः शुभलाय गाङ्गजलपूरपुरितः ॥

(सूत्र-प्रवेश)

(भवहि भैरव, मा)

राग नाट ॥ जति ॥

जय जय जन्मि करह कल्याण ।
सुर नर का तोहरे पम ध्यान ॥
बहुविध शस्त्र अस्त्र धर माता ।
तोहहि एक अभय वर दाता ॥

प्रथमहि सुनवार परवेश ।
 देशयु प्रभव दुर होष कलेश ॥
 जगत प्रकाश देवि पद सारे ।
 नाट रागे गावण इ जति ताले ॥ २॥

(पुष्पाञ्जलि श्लोकः)

चञ्चलू भारखर्वीभवदधिकफलव्यपदध्वीकरेश,
 आसास्तव्यस्तपङ्के सहभवनकरव्यस्त शस्त्राक्षध्वं ।
 स्फूर्जद्वेतालतालं विकटगणपुतं चण्डिकाचण्डहासं,
 पाषाञ्जुक्तानपायास्त्रिपुरपुरभितस्ताण्डवाडम्बरं वः ॥

सूत्र०—हे प्रिये ! एतय आउ ।

(नटी निपनबुद्धाय)

नाथ ! मोर नमस्कार, कसोने कारणे दोलबला ।

सूत्र०—हे प्रिये ! राजाक आज्ञा भयल, भगवतीक महोत्सव प्रभावती-

हरण नाम नाटक नाचय आदेश भेलछ ।

नटी—हम नहि जानवी छीह कउन राजाक आज्ञा ।

सूत्र०—प्रिये ! अवधारण कर । राजाक वर्णना सुनु ।

(सुत्रोक्ति राज-वर्णना)

(उच्चाङ्ग मा)

राम कौशिक ॥ चो ॥

रविकुल कमल विकाश विनेश ।

जगल जगत परगास नरेश ॥

दुरजन तिमिर दुरहु दुर गेल ।

धरम करम अति उपचित भेल ॥

१. पाण्डुविधि मे 'मुस्त' अछि ।

हरपित लोक लोक नहि काहु ।

वरिसय वन जनि धन वरिसाहु ॥

केसो बोल राम, केसो बोल काम ।

काहुक मन पुहवो हिमधाम ॥

चंद्रावति पहु पदुमावतिदमि कस्त ।

तनु जस पुरल सकल दिगन्त ॥

भनयि वंशमणि मने गुणि सार ।

करि बलि राय कर्ज अवतार ॥

एहन राजा श्री श्री जगत्प्रकाश भल ।

नटी—हे प्राणनाथ ! हमे जानल, र वंशावतार श्री श्री जगद्भ्योति-
 मल्लक दूसर घमोवतार, श्री श्री नरेशमल्ल देवक हृदयानन्दन,
 राजाधिराज श्री श्री जगत्प्रकाश भल देव, जन्मिके
 राजधानि शतहु गुणे कह्य नहि पारि, तवादि किछु मोय कहै
 छव, अवधान कर ।

सूत्र०—प्रिये ! कह ।

(नटयुक्त देश वणना)

(सदनमय मा)

उत्तम देश भगतपुर नाम ।

देखितहु सबका भेल अभिराम ॥

आदि जननी ताहा करयि निवास ।

सबहु लोके कल तन्हिके यात ॥

लोक अछय एतय निक जाति ।

इन्द्रपुरि सजे इ देश भल भाति ॥

जगत प्रकाश सुपति एह भान ।

चण्डि चरण छवि भान नहि जान ॥

१. छवि ।

हे नाथ ! एहन राजाक राजधानि ।

सुत्र०—प्रिये ! प्रभावतीहरण नाटक अभिनय कर ।

मटी—प्रभु ! भल कहल । हे नाथ ! दहाय प्रद्युम्न हम प्रभावती,
काछ्य चर ॥

(सूत्र निस्तार)

(उद्योतुम मा)

महबाल ॥ अर्जति ॥

हुमे होयव कन्दर्प-तोहे होउ प्रभावती
सेहे बुहु का छेकल साज ॥ ४० ॥
अनेक मुनि मिलि रह यान ।
इ सबक मन कह अभिराम ॥

(प्रथम कोणे)

सुत्र०—हे प्रिये ! प्रद्युम्न काछ्य, जाय चर ।

मटी—नाथ ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

मटी—हे नाथ ! दहाय कृष्णक संग प्रवेश कर, हुमे वजुनाभ संगे
प्रवेश करव ।

सुत्र०—प्रिये ! अति उत्तम ॥ ४० ॥

(कृष्णादि प्रवेश)

(जाति मा)

(राग मल्लारी ॥ अस्तारा ॥

पीत वसन चर चारि करे ।
शंख चक्र गदा पट्टम धरे ॥
सुत दार सहित कपल परवेश ।
देल अभए दुर कपल कलेश ॥

अगत प्रकाश तृपति एहो गाय ।

मोरा मन विष्णु चरण पद भाव ॥

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा, गद, शारण, प्रद्युम्न, शाम्ब ! हमर
कथा सुनु ।

सर्वे—जगदीश्वर ! आज कह ।

कृष्ण—(श्लोक)

आतोऽहंवमुदैवभूनुस्मरणीयं धरित्रीतले,
दृष्यद्-दानवकोटिशंकरकलाभिडितवैतण्डिकः ।
सोऽहं सम्प्रविशामि रङ्गसदनं मङ्गल्यकारी सतामु-
त्साहं जनयन्पुष्करवनाचिवैश्चरित्रैरपि ॥

हे लोके ! एहन कृष्ण हमे ।

सर्वे—ईश्वर ! सत्य ।

रुक्मिणी—हे नाथ ! हमर गोचर सुनु ।

कृष्ण—प्रिये ! कह ।

(श्लोक)

स्वनाङ्गी रुक्मिणी रुक्मिभगिनी भागवशालिनी ।
रङ्गमण्डपमाविश्य हरामि हृदयं हरे ॥

हे नाथ ! एहन रुक्मिणी हमे ।

कृष्ण—प्रिये ! सत्य ।

सत्यभामा—हे ईश्वर ! हम किछु गोचर करे छव ।

कृष्ण—प्रिये ! कह ।

(श्लोक)

अभग्नसत्या भुवि सत्यभामा रामावलीनामुपरिस्थिताहम् ।
संप्राप्य भलरिमुपेन्द्रमिन्द्रवर्षाहं रङ्गगृहं विशामि ॥

हे प्रभु ! एहन सत्यभामा हुने ।
 कृष्ण—प्रिये ! सत्य ।
 गव—हे प्रभु ! हमहु किछु कहव ।
 कृष्ण—गद ! कहु ॥

(श्लोक)

गदो गदाधरस्याहं मनुजो दनुजान्तकः ॥
 सम्बिशामि भुवा रङ्गमनङ्गमुभयाकृतिः ॥

हे ईश्वर ! एहन गद हुने ।

कृष्ण—गद सत्य ।
 सारण—हे ईश्वर ! हम किछु गोचर कहे छव ।
 कृष्ण—सारण ! कहु ।

(श्लोक)

जगद्विजयनाथस्य कृष्णस्याहनिहानुगः ।
 प्रविशामि दिशामीशानधरोक्तम सारणः ॥

हे ईश्वर ! एहन सारण हुने ।

कृष्ण—सारण ! सत्य ।
 प्रद्युम्न—हे तात ! हमरो विनति गुनु ।
 कृष्ण—वत्स ! कहु ।

(श्लोक)

दर्शकोऽहं शम्बरस्य दर्पहा रतिवत्सलभः ।
 विशामि रङ्गभयनं, देवकोसुतुनन्दनः ॥

हे तात ! एहन प्रद्युम्न हमे ।

कृष्ण—पुत्र ! सत्य ।
 शम्बर—हे प्रभु ! हमर विनति सुनु ।
 कृष्ण—शाम्बर ! कहु ।

(श्लोक)

सदुर्वशावतारस्य, विष्णोर्हृदयनन्दनः ।
 निविशेऽहं मुदा रङ्गे शाम्बो जाम्बवतीमुतः ॥

हे ईश्वर ! एहन शाम्बर हुने ।

कृष्ण—ई निषचय ।
 कृष्ण—हे लोके ! खनेक विश्राम कर ।
 सत्य—ईश्वर ! जे आजा ।
 कृष्ण—हे लोके ! उपवन जायव चर ।
 सत्य—ईश्वर ! अवश्य ॥

(कृष्णादि निरतार)

(हृदय न कर मा)

कोदाव ॥ कामोद ॥ चो ॥

आनन्द भेल हमरे, जायव कदम तले । देखव उपवने ॥ ध्रु ॥

(प्रथम कोणे)

हे लोके ! केलि कानन चलु ।

सत्य—ईश्वर ! जे आजा ।

(द्वितीय कोणे)

कृष्ण—हे गद, सारण, प्रद्युम्न, शाम्बर ! राजवक विनता कर ।
 अशवि—जे आशा ।

(सब प्रद्युम्न शाम्बर तियन विहाय)

शनिमणी तथा सत्य भामा—हे प्रभु ! त्वराय, उपवन विजय कर ।

कृष्ण, उत्तम, चतु ॥ लुर ॥

(कृष्ण शनिमणी, सत्यभामा दवलनहुं हाय ।)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन दर्शन उत्तकडा हांनि छि ।

रविमणी सत्यभामा—उपवन एहन रमणीय ।

(द्वितीय कोणे)

रविमणी सत्यभामा—उपवन एहन रमणीय ।

(द्वितीय कोणे)

रविमणी सत्यभामा—हे प्रभु ! प्रधान कर ।

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन रमणीय ।

रविमणी, सत्यभामा—अवश्य ।

कृष्ण—हे प्रिये ! उपवन कहने रमणीय ।

रविमणी सत्यभामा—अतिरमणीय सोय ।

कृष्ण—हे प्रिये ! विश्राम कर ।

रविमणी सत्यभामा—ताय । भल !

कृष्ण—प्रिये ! हमर कहिनी सुनु ।

रविमणी सत्यभामा—दूधर ! जे आजा ।

(कृष्णदा शृङ्गार ॥ स्वाङ्ग मा ॥)

का ती, भूपा, पह ॥ प्र ॥

अपख रमणी तुम मुख चंद ।

सेहे देखि मोर उपजल आनन्द ॥

गुन्दरि तोहे कर एक परकार ।

मदन वेआधि सजे जे हो संतार ॥

विहसि करहु हम सजे सदभाव ।

अधिक माने इस किछु नहि पाव ॥

जगतप्रकाश भन मानवली ।

माने मारहु जनु तोहे निजपती ॥

हे प्रिये ! हमर मदन ताप दूर कर ।

रविमणी सत्यभामा—हे प्रभु ! हमर किछु मोचर सुनु ।
कृष्ण—प्रिये कहु ॥

(इजे मय जनिहू, मा)

मालय ॥ सो ॥

तोहे पहु सुन्दर नयन कमल दल, तोर रूप मदन समाने ।
सुनह हमर मति आन नहि मोल मति, पिपा जागि अलप परान ॥
हमे नहि सुन्दरि खिन मति नागरि, रति रङ्ग किछु नहि जान ।
मधुर वचन सुनि अमलहु सदन तुम मुक्ति करहु मधुपान ॥
तोहर अघिन हुने आज सुदिन भेल, दरशन पावल तोर ।
हरल अनेक दुख बिहि मोहि देख मुख, निते सेओव पद जोर ॥
नरेश नृपति सुत प्रकाश मल्ल भूप, ई रस कीतुके भान ।
देखि सेवा विनु किछु नहि पाविअ, मोर मन एहि पव जान ॥

सुनु पहु रसिया रे ॥ शु ॥

हे नाव ! हमरा इहा विनु रति नहि ।

कृष्ण—प्रिये ! एहने ।

कृष्ण—हे प्रिया लोके ! अन्तपुर जाव रहु ।

रविमणी सत्यभामा—जे आजा ॥ लु ॥

(इन्द्र, जयन्त, हंस, हंसी प्रवेश)

(भीम अर्जुन मा)

(वसन्त ॥ रूपक ॥)

देवराज सय देवक ठाकुर ।

जे माग जे बल, से देव पूर ॥

सिर मुहुट धरि परवेश देख ।

रङ्ग भूमि देखि आनन्द भेल ॥
जयन्त हंस संगे भेलहु सुसोभ ॥
अमरावतिक उपर कए सोभ ॥
जगत प्रकाश नृपति एही भान ॥
काम अरि क पद कए अवधान ॥

इन्द्र—हे जयन्त, हंस, हंसी ! हमर बोल सुनु ।
सर्व—देवराज कह ।

(श्लोक)

पुल्लोमजाप्राणपतिर्ध्वलस्य भेत्ता, भवानीपतिभक्तियुक्तः ।
विशामि रङ्गाङ्गनमस्तजंभोदम्भोलिभूत्सर्वगुणर्वराजः ॥

हे लोके ! एहन इन्द्र हमे ।

जयन्त—तात ! एहने ।

जयन्त—हे तात ! हमरो किछु गोचर सुनु ।

इन्द्र—बत्स ! कह ।

(श्लोक)

दुस्तदानवकुलस्य दर्पहा पाकशासनिरहं महाबलः ।
सर्वदेवगणसेवितो मुदा सन्निवशामि वररङ्गमन्दिरम् ॥

इन्द्र—बत्स, सत्य ।

हंस—हे देवराज ! हमर किछु गोचर सुनु ।

इन्द्र—पक्षिराज ! कह ।

(श्लोक)

राजहंसकुले जातः पाकशासनसेवकः ।
विशामि मुदितो रङ्ग मरालकुलसेवितः ॥

हे देवराज—एहन आशाकारि सेवक हमे ।

इन्द्र—पक्षिराज ! एहने ।

हंसी—हे देवराज ! हमरो बिनति सुनु ।
इन्द्र—हंसी ! कह ।

(श्लोक)

अहं शुचिमुखी हंसी अमरती भुवनावलीः ।
विशामि रङ्गसदनं मदनप्रियकारिणी ॥

हे देवराज ! एहन शुचिमुखी हंसी हमे ।

इन्द्र—हंसी ! सत्य ।

इन्द्र—हे जयन्त हंस, हंसी ! किछु काल विधाम कह ।

सर्व—प्रभु ! जे इच्छा ।

इन्द्र—हे जयन्त, हंस, हंसी ! नन्दन बन चलु ।

सर्व—देवराज ! अवश्य ।

(इन्द्र निस्तार)

(चुनिवा मा)

सारङ्गी तोड़ि ॥ सो ॥

चलि जाउ जयन्त बेगे अमरावती ॥ ध्रु ॥

हन सब दुख देल वज्रनाभ असुरे ।

कतने जतने हंसी पथाए कह एकर जीव करव दुरे ।

हे जयन्त ! नन्दन देखव जायव ।

जयन्त—तात ! भल ।

(प्रथम कोणे, द्वितीय कोणे)

इन्द्र—हे हंस, हंसी ! इहात तिनि व्यक्ति, वज्रपुर सब वज्रनाभ गारे

लाइ, प्रभावती प्रद्युम्न मिलाउ, हमर कार्य कर ।

हंस—देवराज ! जे आज्ञा ।

(हंस, हंसी, दबलन विहाय)

जयन्त—हे तात ! हमरा नन्दन बन विजय कह ।

इन्द्र—जयन्त ! अवश्य ॥ सु ४ ॥

(परशिव मा)

बलालि ॥ प्र ॥

बेल वर पितामहे पाओल हमे ।
तेहि बने जिनल भुवन तिनि हमे ॥
वज्रनाभ नाम दानव भेल ।
आनन्द सकल अमुर जन बेल ॥
मोर बल मुरमुनिगण हो मलाने ।
के होएत दोसर हमर समाने ॥
कीनुके गावए जगतप्रकाशे ।
गुणि जन मन होश अधिक उलासे ॥

वज्रनाभ—हे प्रेमवती, सुनाभ, सुनीति, प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती
मत्त ! हम किलु कहै छव मुनु ।
सर्व—दैत्यराज ! आज्ञा कर ।

(श्लोक)

सदावलम्ब्यकृतपद्मनाभः सवज्रनाभो हृतवज्रिगर्भः ।
विशाम्यहं वज्रपुरीनिवासो नटालयं अस्तसमस्तदेवः ॥
हे लोके । एतादृश वज्रनाभ हमे ।
सर्व—दैत्यराज ! एहने ।
प्रेमवती—हे नाथ ! हमहु किछ विजप्ति करे छह ।
वज्र—प्रिये ! कहु ।

(श्लोक)

दानवेन्द्रपदद्विसेवया हृतकिटिपया ।
विशामि रङ्ग-सदनं नाम्ना प्रेमवती प्रिया ॥
हे नाथ ! एहन प्रेमवती, इहाक ।

वज्र—प्रिये ! सत्य ।

सुनाभ—हे दानवेन्द्र ! हमर वचन सुनु ।

वज्र—सुनाभ ! कहु ।

(श्लोक)

समस्तदेववृन्दानां दर्पतंदोहदारकः ।
वज्रनाभानुजो रङ्गं सुनाभः संविशाम्यहम् ॥

हे दैत्यराज ! एतादृश सुनाभ हमे ।

वज्र—सुनाभ ! उचित ।

सुनीति—हे प्रभु ! हमर वचन अवधान कर ।

वज्र—सुनीति ! कहु ।

(श्लोक)

सुनीतिर्मन्त्रिराजोऽहं तीर्तन्यकृतभार्गवः ।
नटालयं संविशामि, दृष्टदानवसेवितः ॥

हे प्रभु ! एहन सुनीति मन्त्रिराज हमे ।

वज्र—मन्त्री ! सत्य ।

प्रभावती—हे तात ! हमर विजप्ति सावधान कुष ।

वज्र—पुत्रि ! कहु ।

(श्लोक)

प्रभावती प्रभावतो रतीशरङ्गदायिनी ।
जगत्त्रयेकनागरी विशामि रङ्गमण्डपम् ॥

हे तात ! एहन प्रभावती हमे ।

वज्र—पुत्रि ! एहने ।

चन्द्रावती—हे दैत्यराज ! हम किलु कहै छ ।

वज्र—चन्द्रावति ! कहु ।

(श्लोक)

अहं चन्द्रावती नाम्ना मुनाभतनवोत्तमा ।
रङ्गाङ्गनं समाधामि कामिनीमौलिमण्डनम् ॥

हे दैत्यराज ! एहन चन्द्रावती हमे ।

वज्र—चन्द्रावती, सत्य ।

मुनवती—हे दैत्येन्द्र ! हमर वचन सुनु ।

वज्र—मुनवती ! कहू ।

(श्लोक)

अहं गुणवती कन्या स्वर्गकन्या गुणोत्करः ।
रङ्गस्थानमुपाधामि कामकेलितरङ्गिणी ॥

हे महाराज ! एहने गुणवती हमे ।

वज्र—वस्ते ! सत्य ।

मल—हे महाराज ! हमहु कहव ।

वज्र—मल ! कहू ।

(श्लोक)

मत्तो दानवराजस्य वञ्चनाभस्य सेवकः ।
देवकम्पकरो नित्यं नृत्पस्थानमुपाधये ॥

हे प्रभु ! एहन मल नाम हमे ।

वज्र—मल, सत्य ।

सखी—रानी, हमर गोचर सुनु ।

रानी—सखी कहू ।

(श्लोक)

केशसंस्कारकृच्चन्द्रवेशविन्यासपेशला ।
विशामि रङ्गसैरंधी, पुरंधीणां रहः सखी ॥

हे रानी ! एहन सैरंधी हमे ।

रानी—सैरंधी ! सत्य ।

वज्र—हे लोके ! मुमुक्तं विश्राम कर ।

सखे—दैत्यराज ! सध्वंथा ।

वज्र—हे लोके ! सरोवर निकट सभा जायव ।

सखे—महाराज ! अवश्य ।

(वञ्चनान् विस्तार)

(वयिजि मा)

पहड़िया ॥ मालव द्व ॥

बलहु जायव लोके सभा हमरे ।

अनेक दुख देल हमे सकल अमरे ॥

(प्रथम कोणे)

वज्र—हे लोके ! सभा जायव ।

सखे—दैत्यराज ! अवश्य जायव ।

(द्वितीय कोणे)

प्रभा—हे तात ! हमर प्रणाम, अपन स्थान जायि छि ।

वज्र—पुत्री ! अवश्य ।

(प्रभावती, सखी, दक्षजन विहाम)

मुनाभ—हे दैत्यराज ! त्वरित विजय कर ।

वज्र—मुनाभ ! बलु ॥ लु ५ ॥

(हंस, हंसी, पंतारण दुहाय)

(बंधु, बंधु मा)

सारङ्गी ॥ भय्यारि ॥ चो ॥

जाए देखव दैत्यराज समाज ।

१. पाण्डुलिपि मे 'दैराज' पाठ अछि ।

२. पाण्डुलिपि मे 'धर' पाठ अछि ।

श्रवण करव हमे वासवक काज ॥
लहु लहु जाएव मय ॥ ध्रु० ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसी ! हमे वज्रनाभक निकट जायव ।
हंसी—हे नाथ ! इन्द्रक काज कर ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नाथ ! सरोवर चर ।
हंस—अवश्य चर ।
हंस—हे हंसी ! शनैक विश्राम कर ।
हंसी—नाथ ! अवश्य ।
हंस—हे हंसी ! बड़ अश्विनाम सरोवर ।
हंसी—नाथ ! बड़ रंगस्थान ।
हंस—हे हंसी ! हमर वचन सुनु ।
हंसी—नाथ ! कहु ।

(देखिया मा)

काफी, माख्या ॥ चो ॥

देख तोहे एहे सरोवर के शोभा ।
मोर मन भेल दुहु खेलए के शोभा ॥
कमल तल खेल चकैया जोर ।
से देखि सदन मनोरथ मोर ॥
निलमल धनरस ई परिपूर ।
धिरे आब मारते गुराभि सुशीतले ॥
ए सवे हमे तोर अविन कय देल ।
नाथ रूप देखि मानयो तेजि गेल ॥

जगत प्रकाश मूपति एहो भाखय ।
मुचिमुखि हंसि हंस रस राखय ॥
हे नाथ ! हमे इहाक अधीन ।
हंस—हे त्रिये ! बड़ उत्तम स्थान, ई सरोवर, एतय रहु ।
हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(वज्रनाभावि दयलन कुहाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे सुनाभ ! सरोवर जायव चर ।
सुनाभ—वज्रनाभ ! अवश्य ।
वज्र०—हे सुनाभ ! सरोवर देखि मन उरलास बड़ भेल, एहि धाम
विश्राम कर ।
सत्य—प्रभु ! उत्तम ।

(विश्राम पाय)

वज्रनाभ—हंस ! आश्चर्य न सोय ।
वज्र०—हे हंस हंसी ! इहा तोनिहु व्यक्तिक अपूर्व रूप, अद्भुत स्थान,
सुन्दर वाजय, कलय सय आयल छि, सुनु ।
हंस—देखेन्द्र ! कहु ।

(वज्रनाभोक्ति दण्डक)

(कान कुंडल मा)

गोड़ी ॥ प्र० ॥

कलय सो आयल ई सरोवरे,
तोहे हंसि हंस मिलि के ॥ ध्रु० ॥
किए आएलाह तोहे मोर ई राजे ।
कह तोर भेल की काजे ॥ मेभासा ॥

हे हंस ! कशीन काजे एतय आयला हे ।
हंस—हे देखेन्द्र ! जे आदलाहु से सुनु ।
वज्र०—हंसी ! कहु ॥

(हंसोक्ति दण्डक)

तोर नगर देखय के अभिलाखे ।
ते अयलहु ई कामे ॥ ध्रु० ॥
देखय देह तोहे ई बज्रपुर ।
हमारा मन का आसा पूर ॥ मेभासा ॥

हे देव्येन्द्र ! हमरा इहाक नगर देखय आवलाहु ।
बज्र०—हंसी ! यथेष्ट देखु ॥
बज्र०—हे लोके ! अपूर्व हंस, हंसी, अति सुन्दर तुर, सब देखु ।
सर्व—देव्यराज ! अवश्य ॥

(सोव)

सर्व—हे देव्यराज ! उत्तम कहै छि, अति सुन्दर ।
बज्र०—हे प्रेमवती ! अन्त पुर चलु ।
प्रेमवती—नाथ ! जे आसा ।

(सञ्जनान साक्ष, ववलन विहाय)
(प्रथम कोणे)

बज्र०—हे प्रेमवती ! त्वराम चलु ।
प्रेम०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रेम०—हे देव्यराज ! शीघ्र विजय कलु ।
बज्र०—प्रिये ! चलु ।
हंस—हे हंसि ! हमरा सरोवरे रहु ।
हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(हंस, हंसी, परि विहाय ॥ ध्रु० ॥)
(कृष्ण, हस्तिमणी, सत्यभामा, परिबुहाय)

कृष्ण—हे प्रिये ! खनेक आराम कलु ।
हस्तिमणी, सत्यभामा—नाथ ! अवश्य ।

इति प्रथमाङ्कः ।

॥ अथ द्वितीय दिवसे ॥

(कृष्ण, हस्तिमणी, सत्यभामा, अलंकारन बुहाय)

कृष्ण—हे हस्तिमणी, सत्यभामा ! खनेक विश्राम कर ।
हस्तिमणी—सत्यभामा ! अवश्य ।
हस्तिमणी सत्यभामा—नाथ ! आसा कह ।

(राम मुनि मा)
विभास ॥ प्र ॥

प्रलवह सुन्दरि उगल रवी ॥ ध्रु० ॥
चक्क चक्कि का मन, दुर गेल शोक ॥
भेल प्रभात न आयल गुत लोक ॥
कृष्ण—हे प्रिये ! प्रातःकाल भेल, प्रद्युम्न, गद, शाम्ब लोक नहि
आयल कि ?

हस्तिमणी सत्यभामा—अयलप्राय ॥

(प्रथम कोणे)

प्रद्युम्न—हे गद, सारण, शाम्ब ! पिताक चरण देखब ।
सर्व—हमरहु एहे मन ॥

(द्वितीय कोणे)

सर्व—हे प्रद्युम्न ! त्वराम चलु ।
प्रद्यु—गद, शाम्ब ! चलु ।
सर्व—ईश्वर ! हमर प्रणाम ।
कृष्ण—हे लोके ! वसु ।
प्रद्यु०—अवश्य ।

१. पाण्डुलिपि मे 'उज्जल' पाठ अछि ।

(कृष्ण-वि ब्रह्मन् पिपाय)

हे लोके ! सभा स्वामि बलु ।
सर्वे—जे धाजा ।

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! सत्वर बलु ।
सर्वे—नाथ ! विजय कलु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—हे ईश्वर ! विजय कलु ।
कृष्ण—लोके ! बलु ॥ सु० ७ ॥

(हंस, हंसी, परि बुंहाय)

हंस—हे हंसी ! उपवन देखि रहु ।
हंसी—नाथ ! अवश्य ।

(प्रभावती, सखी, पैसारण बुंहाय)

(कमल गयन मा)

गौड़ी ॥ चो ॥

बलह सखि जाउ पुहु उपवने ॥ ध० ॥
तोहे हमे देखव, बनक शोभा,
हमरा मन लागल ओतए ।
कमल विपिन देखए के लोभा,
ई अम्बुज पर भगर मए ॥

हे सखी ! सरोवर देखव, बलु ।

सखी—हविमणी ! बलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! हमरजे मन सोखलास भय ।
प्रभा—हे सखी ! सनेक विश्वास कर ।

सखी—प्रभावती ! अवश्य ।

(सरोवर हंस सोय)

प्रभा—हे सखी ! कहैत गुनदर हंसी ।

सखी—बलु संभाषण पुछु ।

प्रभा—सखी ! अवश्य ।

(निकट सवने)

प्रभा—हे हंसी ! इहाअ अपूर्व देखे दिव, के थिक ?
हंसी—हे कन्या ! हमे हंसी स्वर्गलोक सजे आयल दि, इहाअ के थिक,
ककर पुत्री ?

प्रभा—हे हंसी ! हमे वज्रनाभ देखक पुत्री प्रभावती ।

हंसी—हे प्रभावती ! हमर बचन गुनु ।

प्रभा—भल, कह ।

(हंसुनि वरक)

(कांहा तोरी, मा)

गौड़ी ॥ सारङ्ग ॥ प्र ॥

गुनु रामा किछु कहिती मोर,
न होअ पति विनु रति ॥ पु० ॥
सुधति बस विदा नहि भेल तोर ॥

हे प्रभावती ! ई तोहर कद, वयस, स्वागि विनु निरर्थक ।

प्रभा—हंसी ! गुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कह ।

हमरजे गुनु एक विनति,
मोय वाला नहि जानो कथा ॥ पु० ॥
हम राखल एहि पुर ए सुधति,
कर वरकार सोहे हति ।

हे हंसी ! बापे हम अस्त-गुर अवस्थि कय लाखल^१ छिअहु, तोहे
उपाय कर ।

हंसी—प्रभावती ! मुनु ।

प्रभा—हंसी ! कहू ।

बेखल कृष्ण युत करहु विचार ।

ओकर होअ सोहे बार ॥

हे प्रभावती ! कृष्णक पुत्र, प्रबुद्धन पुत्र रत्न, जे तोहर उक्ति
स्वामी ।

प्रभा—हंसी ! मुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

तातक बरि सों ई नहि उचीत ।

तोहहि विचार कर नीत ॥

हे हंसी ! हमरा बाप सों कृष्ण सहज धैर, तम्हिका पुत्र सने
प्रीति उचित नहि ।

हंसी—हे प्रभावती ! हमर वचन सुनु ।

प्रभा—हंसी ! कहू ।

मने अनु शंका करहु तोहे आज्ञे ।

एहे होअ उत्तम काजे ॥

हे प्रभावती ! कृष्ण अलोचनदय, हुनका पुत्र सजे प्रीति, कमोनो
शंका नहि, ई कार्य प्रीति कर ।

प्रभा—हंसी ! मुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

तोहर कथा सुनि त होअ नाश,

मोए कयल तोहेरे आश ॥

हे हंसी ! इहाक कथा सुनि, बिरह जवाला भेल ।

१. 'राखल' ।

हे हंसी ! मुनु हमर निवेदन सुनु ।

हंसी—प्रभावती ! कहू ।

(प्रभावतीक बिरहिणी)

(भइ हय चावलि आ)

बेलाथल ॥ खज ॥

सुत भूति मोर कहिनि,

पहु बिनु रहय न जाय ॥ तेक साजनि ॥

बिरह बहन तनु तावए मोर ।

इ वेदन दुख मोहि नहि थोर ॥

पिया बिनु हम निवराएल^१ काल ।

करहु भूति मोर जीव उबार ॥

भय कमल एक तोहेरे आस ।

अबस होएय हम तोहर दास ॥

भनयि प्रकाश नून गुनह इति ।

कय देह तोहे पहु निमग सुगुति ॥

हे हंसी ! कमोन उपाय चिनु, हमर प्राण श्वाक अचीन ।

हंसी—हे राजकन्या ! अजं बहाद का एहन भन तथे हमर कहिनि
बाप के कहू जे तोहि हयो अनेक कीनुत वाला अनैज, से
देखू ।

प्रभा—हे हंसी ! अवश्य बाप के कहव ।

प्रभा—हे हंसी ! ए थाम से चलु ।

हंसी—अवश्य ।

(प्रभावती हंसी रवजन निहार)

(प्रथम कोणे)

प्रभा—हे हंसी ! हमे बापक स्थान जायि छव ।

१. पान्दुरिति मे 'निपलाएर' पाठ अछि ।

हंसी—प्रभावती ! भल ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे प्रभावती ! आन सरोवर जायि छु ।

प्रभा—पुनर्देखन चाहि ॥ लु ॥

(वज्रनाभादि बबलन पुंहाप)

(प्रथम कोणे)

हे गुनाभ ! सभा गृहे चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सर्वे—देवराज ! जे आता ।

सर्वे—प्रभु भिजय कव ।

बज०—अवश्य ।

बज०—हे लोके ! खनेक विश्राम कर ।

सर्वे—प्रभु ! सर्वथा ।

(प्रभावती पैसार, पुंहाप)

(भिरोविनि मा)

केवारा ॥ चो ॥

बरह हमे जाए ॥ झु ॥

अपुन कहिनि लय जायव तात समाज ।

ई कथा कहव सय आज ॥

(प्रथम कोणे)

हे सखी ! तातक निकट जायव ।

सखी—प्रभावती ! नीक ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—प्रभावती ! चलु ।

प्रभा—सखी ! चलु ।

प्रभा—हे तात ! मोर प्रणाम । हे तात ! अद्वय एक वार्ता कहव ।

बज०—पुनि ! कटु ।

प्रभा—हे तात ! एक हंसी देखलि तासा देणक अनेक वार्ता जने छह ते भेट ।

बज०—हंसी भेटयि ।

प्रभा—हे तात ! हमे अपन स्थान जायि दि आजा देखी ।

बज०—पुनि ! जाउ ।

(प्रभावती बबलन निहाप)

(प्रथम कोणे)

प्रभा—हे सखी ! अपन स्थान चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! त्वराय चलु ।

प्रभा—सखी ! चलु ।

बज०—हे मत ! हंसी वजान देह ।

मत—प्रभ ! जे आजा ।

(धुकोणतपाडाव सती)

मत—हे हंसी ! राजाक निकट जाउ ।

(हंसी बबलन पुंहाप)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हमे राजाक निकट जायव ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे मत ! कथि लागि राजाक आवेश भेल ।

मत—राजाक निकट जानव ।

मत—हे देवराज ! हंस हंसी आयल ।

बज०—हे मत ! बोला आनु ।

मत्त-नाथ ! अथशय ।

मत्त-हे हंस हंसी ! राजाक आज्ञा भेल भीतर माउ ।

हंसी-मत्त ! जे आज्ञा ।

हंसी-हे महाराज ! हमर प्रणाम । की आज्ञा ?

बज०-हे हंसी ! किछु कहब मुनु ।

हंसी-देवराज आज्ञा कब ।

(बज्जनाभोषित वण्डक । नवनि मा ।)

माशबा ॥ घो ॥

कहह हंसि अनुभव कहिनि । धु० ॥

अनेक अनेक देश देखल सोहे ।

जे देखि सब जन मोहे ॥ मेभासा ॥

हे हंसी ! इहाय अनेक देश देखलछ, कसोही अपूर्व कथ-
कहु ।

हंसी-राजा ! मुनु ।

त्रिभुवन नहि एकर समान ॥ धु० ॥

भद्र नाम नट देखल हमे,

गुण रूपे सबहि उत्तम ॥ मेभासा ॥

हे देवराज ! भद्र समान नट त्रिभुवन नहि छप ।

बज०-हे हंसी ! भद्र नाम नट कसय रहेछ, हमरा भेटय पारबि,

इहाहि भेटबियु ॥

हंसी-अथशय भेटबाह, हमे आनय जाधि छव ।

हंसी-हे हंसी ! राजाक आज्ञाय नट होलाय आनय ।

हंसी-प्रभ ! अथशय ।

(हंसावि निस्सार)

(बज्जुड़ो नंद कहैया मा)

काफी अनाधी ॥ प्र ॥

चल चल जाएव हमे ॥ धु० ॥

बेने चलद दामोदर निकट,

लए आनय मलदुमन नट ॥

(प्रथम कोणे)

हंस-हे हंसी ! इन्द्रक आज्ञाय, हरिका जायव ।

हंसी-नाथ ! जे आज्ञा ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी-नटरुर प्रबुध्न वज्रपुर आनवाह ।

हंस-हंसी ! अथशय ।

(बज्जनाभोषित वण्डक निहाय)

हे लोके ! हम अन्तःपुर मय विश्राम करव ।

सब-देवराज ! भल ।

(प्रथम कोणे)

हे लोके ! एतय सो जायव ।

सब-देव ! अवशद ।

(द्वितीय कोणे)

इहाय लोके अपन कार्य कह ।

सब-जे आज्ञा, हमर प्रणाम ।

बज्जवती, पुणवती-हे देवराज ! हमहु प्रभावतीक लग जायव । हमर प्रणाम ।

(सकलेश निहाय)

प्रेसवती-हे प्रभु ! त्वराज विजय कथ ।

बज्ज-प्रिये ! चल ॥ धु० ॥

(कृष्णावि पैसारण दुहाय)

(छावव पंडित मा)

होही कोही ॥ धन ॥

जाओ सबहि मिलि मोर सभा ॥ धु० ॥

धिर जगु करह सबहि लोके सोहे ॥

इ सभा देखि के नहि सोहे ॥
(प्रथम कोणे)

हे लोके सुधर्मा जाउ ।
सबै—ईश्वर ! जे आशा ।

(द्वितीय कोणे)

सबै—हे देव ! विजय कर ।
कृष्ण—लोके ! चलु ।
कृष्ण—हे लोके ! जन एक विश्राम करव ।
सबै—ईश्वर ! जे आशा ।

(हंस बल्लभ दुहाय)

(प्रथम कोणे)

हंस—हे हंसी ! कृष्णाक निकट जायव, चलु ।
हंसी—नाथ ! विजय कर ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नाथ ! इन्द्रक कार्य भेल ।

हंस—प्रिये ! सत्य ।

हंस—हे ईश्वर ! हमर प्रणाम । हे श्रीलोकनाथ ! हमरा विश्रामि
सुनु ॥

कृष्ण—हंस कहू ।

(हंसवृत्ति इन्द्रक)

(न कन नर मही तो, मा)

कासी पनाथी ॥ अर्ज ॥

बासवे पठाओल हमे तोहर ठाम,
सुन सुनु विनति हमर सोहे ॥ ध्रु० ॥

देवक देल दुख अथवा दानवराज ।

देवसुत देखितक करहु दलन आज ॥ मेभासा ॥

हे ईश्वर ! आन पुत्र पथाए, वज्रनाथ मारि देवकाज कव । ई
इन्द्र विनति कवल ।

कृष्ण—हे हंसी ! हमर कहिनि सुनु ।

हंसी—देव ! आशा कर ।

कृष्ण—अवश देव हमे स्वपुत्र सहय ।

लहु लहु जाइ जनु हंसि तोहे ॥ ध्रु० ॥

नट वष लय जाइ तोहे सब यत्नलोक ।

अनेक देवका दुर होए मन शोक त मेभासा ॥

हे हंसी ! हमर पुत्रलोक नट हमे लय जाइ, तेहि देव कार्य करवाइ
हंसी—देव ! अवश्य ।

कृष्ण—हे प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ! इहाय नट हमे हंसी संगे वज्रपुर जाइ,
देवकार्य कव ।

सबै—ईश्वर ! जे आशा, हमर प्रणाम ।

हंस—हे प्रद्युम्न, गद, शाम्ब ! धिर जनु कर, शीघ्र विजय कर ।

सबै—हंस ! चलु ।

(हंसादि नटवृत्त, बल्लभ मिहाय)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हे प्रद्युम्न ! वज्रपुर चलु ।

सबै—हंसी ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रद्युम्न—हे हंस ! वज्रपुर स्वराम चलु ।

हंसी—प्रद्युम्न ! विजय कव ।

कृष्ण—हे वशिष्ठजी, सत्यमाथा ! इहाय एतव लहु, हमे वज्रपुर जायव ।

वशिष्ठजी सत्यमाथा—ईश्वर ! जे आशा, हमर प्रणाम ।

(कृष्ण सारण श्रवन्तः पिहाम)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे सारण ! हृगहु संग्राम देख्य नवपुर जायव ।
सारण—ईश्वर ! उचित ।

(द्वितीय कोणे)

सारण—हे ईश्वर ! सत्वर विजय कर ।

कृष्ण—सारण ! जलु ।

शक्तिमयी—हे सत्यभामा, अन्तःपुर भय रहु ।

सत्यभामा—हृदिमयी ! अवश्य ।

(वशिष्ठजी, सत्यभामा परि विहाम) ॥ लु१७ ॥

वज्रनाभ प्रेमवती, पैसारण बुहाय)

(नयना नयन कि मा)

काफी ॥ परिमाण ॥

जायव शृंगारपुर, एतय सो नहि दूर ।

करव काम रङ्ग, आज तोहर सङ्ग ॥

(प्रथम कोणे)

हे प्रिये ! शृंगारपुर जायव, जलु ।

प्रेमवती—नाथ ! जलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रेमवती—हे प्रभु ! त्वराम विजय कर ।

वज्र०—प्रिये ! जलु ।

वज्र०—हे प्रिये ! ए वाम विश्राम कर ।

प्रेमवती—प्रभु अवश्य ।

वज्र०—हे प्राणप्रिये ! हमर बोल किछ सुनु ।

प्रेमवती—प्राणनाथ ! कहु ।

(वज्रनाभोक्ति शृंगार)

(राल सेवके विप्र, मा)

पट्टिमा मालव ॥ काफी ॥ धो ॥

जीवन समय रह्य दिन चारि ।

मदन ताप दुर कर धरजारि ॥

अधर बिम्ब तोर तनु मुकुमारि ।

बिनु बोपे कुसुम चापहि मारि ॥

एहि वेदग मोहि बसुवा पारि ।

पति वध जनु अंगिरह अवधारि ॥

जगत प्रकाश नृपति रस नाथ ।

जे होख रसिक सेहे रस पाय ॥

हे प्रिये ! तोहर ई रूप देखि अति मुग्ध भेल ।

(प्रेमवशुक्ति शृंगार)

हे प्राणनाथ ! हमे किछ विजल्पि करे छव ।

वज्र०—प्रिये कहु ।

(मालिनि के अङ्गना, मा)

मालव ॥ ए ॥

तोहे प्रभु सुनु किछु चिन्ति ।

पिया तेजि हमर न आन गति ॥

ए किन्दर तोहे नाथ हमरे ॥ ध्रु० ॥

नागर तोर तनु कोमल ।

कि कहय जीवन तोहर ॥

मोए नारि तोहरे सोझाधिन ।

पिरिति करह अंत जल भिन ॥

१. वायुलिपि मे 'कुम' पादशब्दि ।

जगत प्रकाश नृप एहे भान ।
अपुत्रव दुहु बिहि तिरमान ॥

हे नाथ ! हमरा ठाम कुवा कर ।

बश०—प्रिये ! अवश्य ।

बश०—हे प्रिये ! खनैक विधाम कर ।

मेश०—नाथ ! जे आजा ।

(सुनाभ, मंत्री, मत्त सात दलवन दुहाय)

(प्रथम कोणे)

सुनाभ—हे मंत्री मत्त ! राजाक वरनि जाय चलु ।

सर्वे—सुनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

उभो—हे सुनाभ ! स्वराय चलु ।

सुनाभ—मंत्री मत्त ! चलु ।

सुनाभ मंत्री मत्त—हे देवराज ! हमर प्रणाम ।

बश०—हे लोके ! बंसु ।

(हंस, हंसी, नट दलवन दुहाय)

(प्रथम कोणे)

हंस—हे भद्रनट ! देवराजक स्थान चलु ।

भद्र०—हंस ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

भद्र०—हे हंस ! स्वराय चलु ।

हंस—भद्र ! अवश्य ।

हंसी—हे नटराज ! देवराजक आजा भेल, भीतर आउ ।

नट—हंसी ! अवश्य ।

नट—देवराज ! अगुर्व सिद्धिरलु ।

बश०—हे नटराज ! कवनो उत्तम नृत्य कर ।

नट०—देवराज ! अवश्य । आजा कर, कवनो नृत्य करव ।

बश०—हे नटराज ! रामायण नाचु ।

नट०—देवराज ! जे आजा ।

भद्र०—हे शुभनट ! हे चारुनट ! देवराजक आजा भेल, रामायण नाचु ।

उभो—श्री राम उत्पत्ति ऋक्षशृंग गक आगमन नाचु ।

भद्र०—उत्तम ।

चलहु काछव जाउ हमे ऋक्षशृंग । शुभनट, विभारक,
चारुनट, लीनपाद राजा, एक मंत्री, चारिजनि देवया, जे वास
रहत से होयत ।

उभो—भद्र ! भेल ।

(परिक्षेपन विहाय)

(राजा मंत्री परिक्षेपन)

राजा—हे देवराज ! इहाक आजा भेल, रामायण नृत्यक । ते रामचन्द्रक
उत्पत्ति निमित्त ऋक्षशृंग गानव जाय, लीनपाद राजा काछि
हमे अयलाहु ।

बश०—हे नटराज ! भेल ।

राजा—हे मंत्री ! देव दुनिया भेल, प्रजाक पीडा भेल, देवज सर्व कहैख
जन्मे ऋक्षशृंग एतय आबयि, तजे वृष्टि होय, सुभिक्ष होय,
ऋक्षशृंग आनन्दक उपान कर ।

मंत्री—हे महाराज ! एकर उपाय जाल, चारि देवया पठाउ, से प्रतारि
लय आनति ।

राजा—मंत्री ! पठाउ ।

मंत्री—महाराज ! जे आजा ।

मंत्री—हे कामकला, कामकेलि, रतिकला, रतिकेलि ! एतय आउ ।

(मिसा तिरवतु ॥ मिसा ॥)

महाराज ! हमरा नमस्कार की आशा ।

राजा—हे कामकला ४ ! तपीवन गय विभाण्डक पुत्र, ऋक्षशृंग, अतारि
आतु ।

मिसा—महाराज ! जे आजा ।

काम०—हे कामकला, रतिकला, रतिकेलि ! राजाक आज्ञाय हमरा
खवहि, ऋक्षशृंग, शृंगार भावे मोहि कय आनय ।

वृत्तीय—कामकला ! भेल कहै छि जनु ।

(परि विहाय)

राजा—हे भंजी ! जाव धरि ऋक्षशृंग आवत ताय हमरा अन्तपुर भय
रहु ।

भंजी—महाराज ! अवश्य ।

(परि विहाय)

(विभाण्डक, ऋक्षशृंग परितु हाय)

विभाण्डक—हे पुत्र ऋक्षशृंग ! तोहे एतय तपस्या करि हमे वन गय
समिल आनय जाइ छि ।

ऋक्षशृंग—तात ! जे आजा ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(ऋक्षशृंग तपस्या)

(मिसा परि दुःख)

काम०—हे राखी लोके ! भाग्य भेल, ऋक्षशृंग देखलाह शुनु ।

वृत्तीय—कामकला ! कहू ।

(कडंब तल जा)

(आभावरी ॥ चौ ॥)

वड़ मुनिराज कयल तप आस ।

एहि राजे संभाषना करए मोर तरास ॥

१. 'कदम्ब' वाड हेवाक चाहौ ।

तोरे आशा मोर ॥ छु० ॥

अवस करए चाहे अपन तृपकार ।

सबहु लोके तोहे कर नयन दान आस ॥

इ सब करिते ऋषि आनन्द भेल ।

एहि उपाय हमर बस कइए देल ॥

अगत प्रकाश भेटियो पति गाव ।

एहे मुनि किछ नहि जान रत भाव ॥

(ऋक्षशृंग मिलाकाने)

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! हमर नमस्कार, भीतर छाड, आसन लियो
बैसू ।

मिसा—भय ।

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! हमर बड़ भाग्य, इहा लोके एतय अयलाह
कयनो कारणे से कहू ।

मिसा—ऋक्षशृंग ! सुनु ।

संस्कृती ॥ चौ ॥

हम सब भागे तोहे दरसन देल ।

तोरे तनु परसैते, पाप दुर भेल ॥

मुनिक कोमल देह सिरिसक फूल ।

तेसन मुनिराज तोहे आसपुर ॥

हमर आसमे पर करि हरि सेवा ।

फल मुले अनेके पुण्य एह देवा ॥

हे मुनि ! हमरा आश्रम जनु, ओतहि अनेक फल मूल हरिपूजा
करव ।

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! अवश्य जासव, हमर वचन शुनु ।

१. आश्रम ।

मिता—ऋक्षशृंग ! कहू ।

ऋक्षशृंग—जाए देखव ओहे आसम तोर ।

तुय देह परसन शित भेल मोर ॥

तोहे लोक जे कह्य से हुभे करय ।

क्रिप हिंस राखल निरिफल अभिनय ॥

ऋक्षशृंग—हे लोके ! हम इहाक चोल करय । हमर संदेह निवृत्ति कर, हमर बाप तपस्वी, इहाय लोके तपस्वी, हमर पिता का बर छोड़, इहाय लोक का किछु छोड़ नहि । हमरा बाप का छाति श्रीफल नहि, इहाय लोक का, दुधि-दुधि श्रीफल, ए धिरोप कहन भेल ।

मिता—हे ऋक्षशृंग ! हमरो पूर्ण तपस्या भेल, तकर फल ई कबैछि, इहाक पिता का तपस्या पूर्ण नहि भेल ।

ऋक्षशृंग—हे लोके ! हमर आश्रम, बाग का तपस्या पूर्ण नहि भेल ।

मिता—हे ऋक्षशृंग ! हमर आश्रम चहु, हुनहि सन पूर्ण फल तपस्वी अनेक देखव ।

ऋक्षशृंग—हे मुनि लोके ! खनक विश्राम कलु, सनय भेल, हमर बाप आगतप्राय ।

मिता—मुनिपुत्र ! अवश्य । तावत् तरोशन देखै छि ।

काम०—हे लोके विभाण्डक भुगि आगतप्राय, हमरा एतय सजे जाउ ।

तृतीय—कागकला ! भल ।

(मिता परि विहाय)

(विभाण्डक परि दुहाय)

विभा०—हे पुत्र ! आज किछ, तोहरा मन आन चिन्ता देखै छि, संभाषना किछु नहि करै छिहू किय ।

ऋक्षशृंग—हे पिता ! पूर्ण भेल तपस्वी अनेक आगत छल, ताहि मन लागल ।

विभाण्डक—हे पुत्र ! कप्रोन तपस्वी ?

ऋक्षशृंग—हे ताउ ! छोड़ नहि छाति दुधि-दुधि श्रीफल, अपूर्व नमन तरंग, स्वर मधुर ।

विभाण्डक—हे पुत्र ! विश्वास अनु करिय, ओ सब भायबी राखस ।

ऋक्षशृंग—ताउ ! जे आता ।

(विभाण्डक विधाय वाप)

विभा०—हे पुत्र ! तोहे तपस्या कय, हमे गन्धाल स्नान करय तीर्थ जायि छय ।

ऋक्षशृंग—पिता ! जे आता ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(मिता परि दुहाय)

काम०—हे लोके ! फल सोलि पक्वान्त, तीर्थ जल सोलि मधु, दिसे ।

तृतीय—कामकला ! अवश्य ।

मिता—हे मुनिपुत्र ! हमर आश्रमक फल भूव खाउ, तीर्थ जल पीउ, ई लिउ ।

ऋक्षशृंग—हे तपस्वि लोके ! ई अपूर्व फल, अपूर्व जल, कतय होयछ ?

मिता—हे मुनिपुत्र ! हमरा आश्रम एहने नदी बहैछ, गाछ सबे एहस फलछ, बिलम्ब जनु कय, थलु ।

ऋक्षशृंग—लोके ! भल ।

(ओदनितना, मा)

तं डी, काकी । प्र ॥

काहे धिर किया काहे धिर किया,

धिर किया वाहे, चलो चलो आसम मेरा,

उह धान कए हरि ध्यान ।

उह चान करिय विष्णु ध्यान ॥ घृ० ॥

१. पण्डितनि मे 'योग' अछि ।

उह देखि के खुसि होए हरा ।
ए तुमरा भरे मेरे पन्न सारा ॥

(सकल विहाय)

(विभाण्डक परि दुहाय)

(कक्षशृंग सोय)

विभाण्डक—हे ऋक्षशृंग ! सीत कन्य रेल, हा पुत्र २॥

(मूर्छा, बाझाव ध्यान दुष्टि न सोय)

हमे जानल, रामावतार होनिहार भेल, विधाताय ई घटना कयल,
भल, भानी अवश्य होयत ।

(विभाण्डक परि विहाय)

(राजा, मंत्री परि दुहाय)

राजा—हे मन्त्री ! ऋक्षशृंग कहने नहि आयलछ ?

मंत्री—गहाराज ! ऋक्षशृंग आयल प्राय ।

(मिसा सकल परि दुहाय)

कामकक्षा—हे महाराज ! इहाक आज्ञाय ऋक्षशृंग अनलाह ।

राज—हे ऋक्षशृंग ! हमर नमस्कार, विजय कइ, हमे अनल लाह
देश रक्षा निमित्त, हमरा देश रक्षा भेल, इहाय किछु दिन

विश्राम कइ, इहाके शान्ता नाम कन्या देवि ।

नट—हे देवराज ! ऋक्षशृंगक आगमन परि नृत्य कयल, आबे की
आज्ञा ?

बज्र०—हे नटराज ! धन्य धन्य तोह लोक, तोह समान नट विभुवन
नहि छय ।

हंसी—तय कहल, ई प्रसाद लोड, आज हंसी संगे आस जाड,
समयांतर नृत्य देखय ।

नट—देवराज ! जे आज्ञा ।

(नट हंसी बात बने दबलन विहाय)
(प्रथम कोणे)

नट—हे हंसि ! बात चलु ।

हंसी—नट ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—हे नट ! त्वराय चलु ।

नट—हंसी ! अवश्य ।

बज्र०—हे प्रेमवती, मंत्री मत्त ! तोहि लोके एतय रहइ, हमे सातक
दर्शन जायव ।

प्रेम०—प्रभु ! विजय कर । हमर प्रसंग ।

(वज्रनाभ, सुनाभ दबलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

बज्र०—हे सुनाभ ! सातक आश्रम चलु ।

सुनाभ—देव्येन्द्र ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे देवराज ! त्वराय चलु ।

बज्र०—सुनाभ ! अवश्य ।

प्रेम—हे मन्त्री मत्त ! अन्तःपुर भन रहइ ।

सर्व—देवराज ! अवश्य ।

(प्रेमवती, मन्त्री मत्त परि विहाय (नट २॥))

(प्रभावती पैतारण दुहाय)

(तिरि बिनु, मा ॥)

नट ॥ अज ॥

हम जायव विजय सदन ॥ घु० ॥

एतय सो गृह किछु नहि दूरे ।

चिरे चिरे जायव आपनुक पुरे ॥

(प्रथम कोणे)

प्रभा—हे सखी ! अपन गृह चलु ।

सखी—प्रभावती ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—हे प्रभावती ! त्वराय विजय कर ।

प्रभा०—सखी ! चलु ।

प्रभा०—हे सखी ! किछु काल एहि शाने रहव ।

सखी—प्रभावती ! अवश्य ।

(हंसी, प्रद्युम्न वलन हुं हाम)

(प्रथम कोणे)

हंसी—हे प्रद्युम्न ! इहाय^१ एतय रह, तोहे ये मुक्ति आवय पारिय, ते भासि आवह, हमे प्रभावती लग जाचि छत् ।

प्रद्युम्न—अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

हंसी—स्वराय हमे जायव ।

हंसी—हे प्रभावती ! प्रद्युम्न आवलाह ।

प्रभावती—हमर भास्य ।

(मालिनी स्वान जोडाव पैसारण हुं हाम)

(भिप वा आई भा)

आसावली ॥ चो ॥

मालती भाधवी धमन वकूल,

ई सब लय जायव दागव पुर ।

देखव हमे एहे पुरक शोभा ॥ छ० ॥

कुल राखव हमे प्रभावती पास ।

पुर होयव गोर मन का आस ॥

१. पाण्डुलिपि ये 'हाम' पाठ छैक ।

(प्रथम कोणे)

हमे मालिनी ई पुष्पमाला लग प्रभावतीक लग जायव ।

प्रद्युम्न—हमे एहि पुष्प उपल मगरक रूप धरि अस्तापुर जायव ।

(द्वितीय कोणे)

मालिनि—हमे प्रभावती देखिनि ।

मालिनि—हे राजकुमारि ! हमर प्रणाम, इ कुलक माला लियो ।

प्रभा—हे मालिनि ! बड़ उत्तम पुष्प आनख, एतय लहु ।

मालिनि—प्रभावती ! अवश्य ।

मालिनि—हे प्रभावती ! हमरा विद्या दिउ ।

प्रभा—मालिनि ! जाउ, ई वस्त्र लिउ ।

मालिनि—प्रभावती ! अवश्य ।

(मालिनि वलन विहाम)

(तृतीय कोणे)

हमे अपन गृह जायव ।

प्रभा०—हे शुचिमुखी ! एतय आउ, हमर स्थान ।

शुचि०—प्रभावती ! कहू ।

(प्रभावशुक्ति विरहिनी ॥ राधा, मा ॥)

भय्यारि ॥ चो ॥

कि भेल प्रण मोरे, धयिरज नहि हमरे ॥ छ० ॥

देखल दिनान्त उगल दुजराज ।

के विधि सहव हमे आज ॥

एक भमर गाव उत्तन सरे ।

से साव करण खपरे ॥

ए कुहु मिलि प्राण मोर हरि लेल ।

जीवन संकट भेल ॥

सुनहं हंसि हमर किल बिनती ।
के होयत मोर गती ॥
एह रस गावय प्रकाश भूपती ।
देखि चरण मोर मती ॥

प्रभा०—हे सुविमुखी ! प्राण संकट भेल ।

शुचि०—भेल होयत ।

(प्रष्टुन् प्रत्यक्ष)

शुचि—हे प्रभावती ! जन्हिका लागि तोहर विरह वेदना से प्रचुम्न
एहै ।

(प्रभावती लज्जा धीय)

छ०—हे प्रभावती ! ई स्वयं वरमाला प्रचुम्न के दिथी ।

प्रभा—हंसी ! जे आशा ।

(स्वान मानस कीपाय के)

हंसी—हे प्रभावती, हे प्रचुम्न ! इहं दुहु व्यक्ति का उचित संगम
भेल, हमे अपन स्थान जायि छल, अनुज्ञा दिथी ।

प्रभावति, प्रचुम्न—हे हंसी ! इहाक यत्ने हमरा पूर्ण कामना भेलाहु,
स्नेह लाख, विजय कर ।

हंसी—हे नाथ ! ई वार्ता इन्द्र के कहव, जलु ।

हंस—प्रिये ! अवश्य ।

(हंस, हंती निस्तार)

(विनोद भभरा, भा ॥)

सारङ्गी ॥ प्र ।

पुरण कयल हम इन्द्रक काज ।

जायव मय आज ॥ च० ॥

विद्याहरि प्रभावती, सुन्दरि क भेल गति ।
दिने दिने दुहुका एकमति ॥

(प्रथम कोणे)

हंस—हे प्रिये ! इन्द्र के ई सब वार्ता कहव ।

हंसी—नाथ ! उचित ।

सखी—हे प्रभावती ! हमे माहाक भग जायव ।

प्रभा०—हे सखी ! ई वार्ता ककरो धाम जनु कह ।

सखी—रानी ! भल ।

(सखी दबलन निहाय)

(प्रथम कोणे)

ई वार्ता रानी के कहव ।

(द्वितीय कोणे)

स्वराय जायव ।

(प्रष्टुम्नोक्ति प्रसार)

प्रष्टु०—हे प्रिये प्रभावती ! हमर बचन सुनु ।

प्रभा—प्राणनाथ ! आज्ञा कर ।

(हमर वचन किछु मा ॥)

आशावरी, सारङ्गी ॥ चो ॥

वदन पंजा नल भयन खंजन ।

तोह रामा हरि लेल मोर मन ॥

जुगल पयोधर स्वयंभु महिष ।

दरशन निमित्त आएल ई देश ॥

दसन तोहर भेल उत्तम मोति ।

कि कहव हमे एकर जोति ॥

रति रस भाव तोह सुवान ।

तोह सनि सुन्दरि न देख आन ।

जगत प्रकाश नृपति एहे बानि ।
गुणवति नामरि अति सयानि ॥

प्रभु०—हे प्रभावति ! हमर रतिरस पूर्ण कर ।

प्रभा०—हे प्राणेश्वर ! इहाक अति अद्भुत रूप लावय^१, किछु हमे कहे
छव, अवधान कर ।

प्रभु०—प्रिये ! कहू ।

(प्रभावगुणित शृंगार)

(कहनिया, मा ॥)

धनाधी ॥ चो ॥

ए पिदा तोहे मुन्दर रे ॥ ध्रु० ॥

अलप धिनति मोर मुनह हे, अरे पदु,

आज मोर दुख दुर वेला ॥

बदन कमल तोर देखर हे, अरे पदु,

शे रूप तोहे दरशन वेला ॥

तोहर सरूप मय आनर हे, अरे पदु,

हुहु समुचित संग भेला ॥

हे प्रभु ! हमे बड़ पुण्य इहा पबला है ।

प्रभु०—हे प्राणप्रिये ! खनेक विश्राम कर ।

प्रभा—प्राणनाथ ! अवयव ।

प्रभु०—हे प्रिये ! वासस्थान जायव ।

प्रभा—हे प्रभु ! हमर नमस्कार, पुनु दर्शन चाहय ।

(प्रभुन्न दरि विहाय)

प्रभा—हमे एहि याम बन एक विश्राम करव ।

१. वाञ्छुलिपिमे 'रावण' पाठ छैक ।

(चन्द्रावती गुणवती पैमारण दुहाय)

(एमन तुमार मा ॥)

धराड़ी ॥ ए ॥

जायव हुहु प्रभावतिक धाम ॥ ध्रु० ॥

अबला जन हूगे अबला तोहे,

अबला पति बिगु कैउ नहि सोहे ॥

(प्रथम कोणे,)

चंद्रा०—हे गुणवति ! प्रभावती धाम जायव ।

गुण०—चन्द्रावती ! अवयव ।

(द्वितीय कोणे)

गुणवती—हे चन्द्रावती ! स्वराज चलु ।

प्रभावती—गुणवती ! चलु ।

बभे—हे बहिन ! हुभर प्रणाम ।

प्रभा०—अभिमत स्वामी पावह ।

प्रभा०—हे बहिन ! हुहु एतय गाउ ।

बभे—बहिन ! अवयव ।

इति द्वितीयाङ्क ।

अथ तृतीय दिवसे ॥

(प्रभावती, गुणवती अलंकरण कुंहाप)

प्रभा०—हे वहिनि ! खनेक विश्वास कर ।

उभे—वहिनि ! अवश्य ।

(प्रभावती शीघ्र)

चन्द्रावती—हे गुणवती ! प्रभावती केष्टा विपरीत भेल, कवनो पुष्प प्रवेश भेल ।

गुण०—चन्द्रावती ! भल कहै छि, वनु, हमराहु विनती फलव ।

चन्द्रा०—अवश्य ।

उभे—हे प्रभावती ! हमर गोचर सुनु ।

प्रभा०—चन्द्रावती, गुणवती ! कह ।

(हुसो चारि प्राण, सा ॥)

धुरिमा मल्लाल ॥ १ ॥

हमे अश्रमिनि नारी, तोहे भाग्यमान ॥ छु० ॥

तोहर चरित्र हमे देखर आन रे,

आलस तनु तोर सोभावे सय जान ॥

ई कलश भरण कएल कजेने,

अधरमे कएल पाव ॥

हे वहिनि ! पुनु हमरा गोचर सुनु ।

प्रभा०—चन्द्रावती, गुणवती ! कह ।

(अरे हो ऐसे, माझ मना, सा ॥)

तोड़ि ॥ कर्ज ॥

सुनु तोहे दुहुक धानि

धिरहु दाइल मन मोर ॥ छु० ॥

तोहरा भेल प्रति, देखल उत्तम रिति
मोर नहि भेल गति, करहु तोहे गति ।

उभे—हे वहिनि ! हमर दुहुक गति जितु ।

प्रभा०—भल होयत पुनु ।

उभे—प्रभावती ! कह ।

सुनु राजनि मोरवानी, काज कए देख हमे तोहरे ॥

करय मए जुगुलि जनु संकहे मति,

कर तोहे भगुति अबत होयत गति ॥

प्रभा०—हे चन्द्रावती, गुणवती ! चिता जनु करिय, इहाहुक स्वामी कए देव ।

उभे—प्रभावती ! अवश्य ।

प्रभा०—हे वहिनि, तोहरा दुहु व्यति के एहन विश्वास देखि द्यु जे तोहर कामना पूर्ण होयत ।

उभे—इहाक प्रसाद चाहिय ।

प्रभा०—हे वहिनि ! सुनु ।

उभे—प्रभावती ! कह ।

(प्रभावतुनि नीत)

(नयन तरप दार सा ॥)

मल्लाल ॥ २ ॥

दुहुक जीवन भार, हीनारि, विद्या देख मोए तोहरा के ॥ छु० ॥

करहु तोहे विद्याक ध्यान, पूर होय तोहरे काज ।

कर वेश विन्यास आन ॥

प्रभा०—हे वहिनि ! विद्या लेहु ।

उभे—इहाक कृपाय पावल, अजे हम पूर्ण कामना भेलाहु ।

(प्रद्युम्न परि प्रवसन कुंहाप)

हे त्रिवे प्रभावती !

प्रभा०—हे प्रभु ! हमर नमस्कार । हे प्रभु ! इ दुहु जनि हमर बहिन
इहाक प्रणाम करैछ ।

प्रद्युम्न—प्रभावती ! उचित ।

प्रभा०—हे बहिन ! हमरा नाथ के प्रणाम कर ।

उभे—प्रभावती ! अवश्य ।

उभे—हे ठाकुर ! हमर प्रणाम ।

प्रद्युम्न—पूज कान होव ।

प्रभा०—हे नाथ ! हमरा आधि कृपा कयल, ई दुखि व्यक्तिक के पति
होयत से विचार कर ।

प्रद्युम्न—हे प्रभावती ! चन्द्रावती का गद स्वामी, गुणवती का शाम्भ
स्वामी ।

प्रभा०—नाथ ! उचित ।

प्रद्युम्न—हे गद, शाम्भ ! एतय जाउ ।

(गद शाम्भ पैसारण हुंहाय)

(शामि २ तिके संगे, मा ॥)

रामकरी ॥ प्र ॥

कि कहल परद्युम्न जायव दुहु मिलि ॥ ध्रु० ॥

चिर न करि केने चलहु आज ।

कएल आसन्धस की भेलहु काज ॥

(प्रथम कोणे)

गद—हे शाम्भ ! कवि लायि प्रद्युम्न बजब्लाह ।

शाम्भ—जानि नहि होयि आज ।

(द्वितीय कोणे)

शाम्भ—हे गद ! केने चलु ।

गद—शाम्भ ! चलु ।

गद—हे प्रद्युम्न !

प्रद्युम्न—हे गद ! हमर नमस्कार ।

गद—कल्याण होव ।

शाम्भ—हे प्रद्युम्न ! हमर नमस्कार ।

प्रद्युम्न—शुभ होय ।

प्रभा०—हे प्रद्युम्न ! की निमित्त आज्ञा कयल ।

प्रद्युम्न—हे गद ! इहाय चन्द्रावती बियाह कर ।

हे शाम्भ ! इहाय गुणवती बियाह कर । ई निमित्त आज्ञा कयल ।

उभे—अवश्य करव ।

प्रद्युम्न—हे प्रभावती ! चन्द्रावती गद के, गुणवती शाम्भ के देउ ।

प्रभा०—प्रद्युम्न ! अवश्य ।

प्रभा०—हे चन्द्रावती गुणवती ! दुहु जनि दुहु व्यक्ति के पुष्प माल दियो

उभे—प्रभावती ! भल ।

(उभे, स्वामि-साधन कोषाम के)

प्रद्युम्न—हे गद ! होहरा दुहु जनि, एतय रह, हमे पुष्पवाटिका जायव ।

गद—प्रद्युम्न ! जाउ ।

प्रद्युम्न—हे शाम्भ ! पुष्पवाटिका जायव ।

शाम्भ—प्रद्युम्न ! अवश्य ।

(प्रद्युम्न, शाम्भ, प्रभावती, गुणवती दबलत पिहाय)

(प्रथम कोणे)

प्रद्युम्न—हे शाम्भ, प्रभावती, गुणवती पुष्पवाटिका चलु ।

गद—प्रद्युम्न ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

शाम्भ—हे प्रद्युम्न ! इहा लोके पुष्पवाटिका जाउ, हम अपना मान
जायव ।

(शास्त्र, पुण्यवती दयलन विहाय)

प्रभा०—हे प्रभु, तोलित विषय कर ।

प्र०—प्रिये ! चलो ।

(गद्योक्ति शृंगार)

हे प्रिये ! इहाक एष जीवन किछु कहै छी गुनु ।

चन्द्रा०—नाथ ! कह ।

(ए सखि, मा)

विभात ॥ एतात ॥

मृगनयनि तोहे अति तरुनि ॥

तोहे देखि भुगुवण महाभुनि ॥

कुच जुग तोहेर हेम कलेश ॥

तगु परशने कुर होय कलेश ॥

जनु मारह रामा कुसुमदान ॥

सुनने देखि मालिगन दान ॥

जयत प्रकाश धरिष्यति भान ॥

ई नारिक आन नहि सगान ॥

की कहव रे, देक ॥

नव—चन्द्रावति ! हमर मन, सानन्द कर ।

(चन्द्रावत्युक्ति शृंगार)

चन्द्रा०—हे नाथ ! मोरा निवेशन सुनु ।

नव—प्रिये ! कह ।

(केशरीक, मा)

आसावरी काकी ॥ प्र ॥

पहु बिनु अबला केउ नहि सोभ ।

तोहे देखि कसोम जुवति नहि सोभ ॥

भुगुधा तारि भाव नहि जान ।

त्रिभुवन नहि तोहेर उपमान ॥

मधुर वचन सुन अमिष समुद ।

तोह मुख कि कहव अति अशुद ॥

प्रकाश नृपति भन रघुपति कुल ।

जहुकुल गद रतिरस परिपूर ॥

हे प्रभु ! हम इहाक अधीन ।

नव—हे प्रिये ! खन एक विश्राम कर ।

चन्द्रा०—नाथ ! अवश्य ।

नव—हे चन्द्रावती ! प्रभुन निकट चल ।

चन्द्रा०—नाथ ! विजय कर ।

(गद, चन्द्रावती दयलन विहाय)

(प्रथम कोणे)

नव—हे प्रिये ! त्वराय सोलस चल ।

चन्द्रा०—नाथ चल ।

(द्वितीय कोणे)

चन्द्रा०—हे प्रिये ! शोछ विजय कर ।

नव—प्रिये ! चल ॥ लु १२ ॥

(कश्यप, शिष्य प्रवेश)

(साजन आय मा)

काफी, धयाओ ॥ चो ॥

आधरा कश्यप मुनिराज,

रङ्गभूनि देखह प्रिय तोहे धाज ॥

भोए उत्तम मुनि ॥ धु ॥

कश्यप—हे सुशोध, हे प्रबोध ! हमर वचन सुनु ।

उमी—गुण ! आज्ञा कर ।



(श्लोक)

सरसिताम्रनाशासनमादृतः समधिगम्य जगत् क्रमतोऽनुजम् ।
सन्तकवृत्तसदः प्रविशाम्यहं मुनिवरः प्रमत्ता इह कश्यपः ॥
हे सुबोध, प्रबोध ! एतादृश कश्यप हूँ ।

उन्नी—मुनिराज ! सत्य ।

गुबोध—हे गुरो ! हमर मोचर किछु सुनु ।

कश्यप—गुबोध ! कहु ।

(श्लोक)

अहं सुबोधः प्रतिपन्नबोधः श्रोतव्यपादिष्टतया महर्षेः ।
विशामि रंजं वलितान्तरंगं, पालीयजन्मेव सहस्ररत्नेः ॥
हे गुरो ! एहन सुबोध हूँ ।

कश्यप—भले ।

प्रबोध—हे मुनीश्वर, हम किछ कहै छव ।

कश्यप—प्रबोध ! कहु ।

(श्लोक)

गुरोः पदहस्तकृतप्रबोधः प्रबोधनाम मुनिवृद्धवन्द्यः ।
विशामि हर्षादहमोत्पन्नकिमुक्तो नटस्थालमस्तद्वेषः ॥
हे गुरो ? एतादृश प्रबोध हूँ ।

कश्यप—सत्य ।

कश्यप—हे सुबोध, प्रबोध ! विश्राम कर ।

उन्नी—हे गुरो ! अवश्य ।

(वज्रनाभ, मुनाभ वंसारण दुहाय)

(चल चल मुबबनि, ना)

पहड़िया ॥ परिमान ॥

चल चल मुनाभ तातक पासे ।

पिलाक चरणा देखि पापक नासे ॥

१. पाण्डुलिपि में 'भर' पाठ छैठ ।

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे मुनाभ ! मुनिक आश्रम चल ।

मुनाभ—वज्रनाभ ! चल ।

(द्वितीय कोणे)

मुना०—हे वैद्यराज ! त्वराय चल ।

वज्र०—मुनाभ ! चल ।

वज्रनाभ, मुनाभ—हे तात ! हमर प्रणाम ।

कश्यप—आयुष्मान् भव । हे वरस ! एतय बँतू ।

उन्नी—तात ! अवश्य ।

कश्यप—हे वरस ! कब्योन कार्य एतय आयलाह ?

वज्र०—हे तात ! इहाक प्रसारे सकल पूर्ण भेल, इहाक आज्ञा होय ती
राजसूय यज्ञ करिय ।कश्यप—हे पुत्र ! अनु करह, संपन्न नहि होयत, इन्द्रवज्र सोहरा बेरी,
त्वराय घर जाह ।

वज्र०—तात ! जे आज्ञा ! हमर प्रणाम ।

(वज्रनाभ, मुनाभ वक्षल विदाय)

(प्रथम कोणे)

वज्र०—हे मुनाभ ! मुनिक आज्ञा भेल, घर जायत ।

मुनाभ—प्रभु ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

मुनाभ—वैद्यराज ! घर चल ।

वज्र०—मुनाभ ! चल ।

(वज्रनाभ, वज्रनाभ वंसारण दुहाय)

सल्लाल ॥ वी ॥

मुनो रचना वधारिनिया ॥ छू ॥

तजे बित न सोहायो मय तेरे गुण भाव,

तेरे रूप देखि के लागी मन मेरा ॥
करो हम सो भाव तेरे पुम्बन वासी,
वह समय योरे चुनो ही न करे तेरा ॥
(प्रथम कोणे)

आज्ञा—हे नाथ ! पुत्र मागव ।
आज्ञा—कश्यप सेवा कय पुत्र मागव ।
आज्ञा, आज्ञा—हे कश्यप ! हमर नमस्कार ।
कश्यप—अभीष्ट लाभ होव ।
कश्यप—हे आह्वय ! कश्यप कामनाय हमर धाम आयलाह ?
आज्ञा—हे ऋषीश्वर ! हमरा वाङ्मक भेल । एतहु दिन पुत्र नहि भेल,
से मागव आयलाहु ।
कश्यप—अवश्य वहाँ का पुत्र होयत, हमर दर्शन सफल होयत, अपने घर
जाउ ।
आज्ञा—हमर नमस्कार । (प्रथम कोणे)
आज्ञा—हे प्रिये ! घर जायव ।
आज्ञा—नाथ ! अवश्य । (द्वितीय कोणे)

आज्ञा—हे नाथ ! सामन्त भेलाहु, मुनिराज बल^१ देल ।
आज्ञा—हे प्रिये ! हमरा भाग्य ।

(कश्यप शिष्य निहत्तर)

(अज बक खोर, भा)

काफी ॥ धी ॥

हमे करव ईशक ध्यान,

१. बल ।

२. फल ।

३. घर ।

ई छाड़ि जान न जाना धु ॥
बलह शिष्य आह्व तपोवन ।
शिष्यक जरण एक सोर धन ॥
(प्रथम कोणे)

हे मुबोध प्रबोध ! तपस्या करव ।

उभो—गुरु ! अवश्य ।

(द्वितीय कोणे)

उभो—हे गुरु ! तपोवन विजय कर ।

कश्यप—मुबोध, प्रबोध ! चलु ॥ लु १२ ॥

(शाम्भ, गुणवती बबलन हुँहान)

(प्रथम कोणे)

शाम्भ—हे प्रिये ! शृङ्गार मण्डप चलु ।

गुण—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

गुण—हे प्रभु ! शृङ्गार मण्डप देखय हमरहु वद^१ उत्कंठा ।

शाम्भ—प्रिये ! चलु ।

आह्व—हे प्रिये ! ई रमणीय स्थान, विद्यान कर ।

गुण—नाथ ! अवश्य ।

शाम्भ—हे मृगनयनि मुग्धे ! हमर विनति मुनु ।

गुण—नाथ ! आज्ञा कर ।

(माध्वोक्ति शृङ्गार)

(जगन्ना, भा)

भोपालि ॥ धी ॥

गुणवति तोहे सब गुण परिपूर ।
मोहि हृदय सत्रे जनु कर दूर ॥

१. बक ।

कीमल कर तुझ किसलय भास ।
चार जीवन तोर भवन बिलास ॥
दरशन देह तोहे सरयक शब्द ।
देखि बदन होय मन सातन्व ॥
न कर न कर घनि प्राणक नास ।
विवरि एहे मोर तोहरे पास ॥
जगत प्रकाश नृप कह्यो होई वाला ।
शाम्भ कएलक हृदयक हारा ॥

शाम्भ—हे गुणवती ! तोहर गुण की कहव ।

गुण०—हे प्राणनाथ ! हमर हृदय वेदन सुनु ।

शाम्भ—प्रिये ! कह ।

(गुणवत्पुक्ति शृङ्गार)

(दुचरी ऐह, मा)

कोराव ॥ प्र ॥

तोहर वचन सुनि जीव मोर कपयी ।
दुरदक भाय नलिनि नहि सहयी ॥
हुने अति वालि तोहे बर तरुना ।
पहु मोहि देखि नहि किए कर कलना ॥
हठ जगु करह मुन्दर नागर ।
तुझ कर परसे होय हिय कातर ॥
जगत प्रकाश नृपति एही नावए ।
जे बुच जन होए सेहै रे पावए ॥

हे नाथ ! अवसर सब रमणीय ।

शाम्भ—हे प्रिये ! खन एक विश्राम कर ।

गुण०—नाथ ! अवश्य ।

(प्रद्युम्न, प्रभावति, चन्द्रावती दुःहय)

(नन्द नन्दन, ॥ मा ।)

सारङ्ग ॥ प्र ॥

एहन नारी तोह हमरा पालि ॥ धृ० ॥

सुन्दरि मुख देखि जाएव शाम्भ पास ।

हमे कएल रमनि तोहे रति आस ॥

(प्रथम कोणे)

प्रद्यु०—हे प्रिये ! शाम्भ देखव जायिवा ।

प्रभा०—प्रभु ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

प्रभा०—हे प्रभु ! त्वराय विनय कर ।

प्रद्यु०—प्रिये ! चलु ।

शाम्भ, गुणवती—हे प्रद्युम्न ! हमर प्रणाम । एतल विनय कर ।

प्रद्युम्न—शाम्भ ! अवश्य ।

(गद चन्द्रावती बचन दुःहय)

(प्रथम कोणे)

गद—हे चन्द्रावती ! प्रद्युम्न देखव जायव चलु ।

चन्द्रा०—नाथ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

चन्द्रा०—हे प्रभु ! प्रभावती पास जायव ।

गद—प्रिये ! चलु ।

गद—हे प्रद्युम्न !

प्रद्युम्न, प्रभावती, शाम्भ, गुणवती—हे गद ! हमर प्रणाम ।

गद—सबु नाथा होय ।

प्रद्यु०—हे लोके ! अन्तःपुर भय रह ।

सब—अवश्य ।

(प्रद्युम्नादि परि विहाय)

(देवराणी, मन्त्री परि बु'हाय)

हे मन्त्री ! देवराज की नहि आयल छवि ?

मन्त्री—हे महारानी ! देवराज आवता ।

(सखी बचन बु'हाय)

(प्रथम कोणे)

रानीक लग हुमे जायव ।

(द्वितीय कोणे)

सखी—स्वराय जायव ।

सखी—हे रानी ! हमर प्रणाम ।

रानी—सखी एतय आइ ।

सखी—रानी, अवश्य ।

सखी—हे रानी ! कन्यापुर कछोनहु पुरुषक प्रवेश भेलछ, से बुझु ।

रानी—सखी ! बुझव ।

(बज्जनाभ, गुनाभ वंसारण बु'हाय)

ज्याडा ॥ मा ॥

मालथी ॥ चो ॥

बहु भाय सुनाभ, अपनुक सयने ।

श्री घर देखय के भेल भीर मने ॥

(प्रथम कोणे)

बज्ज—हे सुनाभ ! नगर अयलाहु ।

गुना—लोक विमन सन देख छी ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे बज्जनाभ ! घर स्वराय चलु ।

बज्ज—सुनाभ ! चलु ।

बज्ज—हे प्रिये ।

रानी—हे नाथ ! हमर नमस्कार, विजय कर ।

बज्ज—प्रिये ! अवश्य ।

बज्ज—रानी ! कुशल ?

रानी—हे प्रभु ! सब कुशल, एक वार्ता अकुशल ।

बज्ज—ह ! ह ! की अकुशल ?

रानी—कन्याक अन्तःपुर कछोन पुरुष प्रवेश भेल ।

बज्ज—हे सुनाभ, मन्त्री मत्त, बड़ साहसी कैमो थिक, साज कय चलहु मारव ।

सुनाभ—अवश्य ।

बज्ज—हे प्रेमवती ! तोहरा एतय रहु, हम बैरी मारव जायव ।

प्रेम—प्रभु ! विजय कर, हमर प्रणाम ।

(बज्जनाभि भास बचन विहाय)

(प्रथम कोणे)

बज्ज—हे सुनाभ ! तोराय चलु ।

सुनाभ—बज्जनाभ ! चलु ।

(द्वितीय कोणे)

सुनाभ—हे देवराज ! बैर मारव चलु ।

बज्ज—सुनाभ ! चलु ।

प्रेमवती—हे सखी ! अन्तःपुर भय रहु ।

सखी—रानी ! अवश्य ॥ जु १५ ॥

(प्रद्युम्नादि परि बु'हाय)

प्रभु—हे लोके ! बज्जनाभ नगर अयलाह, युद्ध अवश्य होयत, हमरहु सुराज्य सबहि होइ ।

सखी—सुसज्ज छी ।

(बज्जनाभि बचन बु'हाय)

(प्रथम कोणे)

बज्ज—हे सुनाभ ! कन्यागह जायव ।

मुनाभ—देखराज ! भल ।

(द्वितीय कोने)

मुनाभ—हे देखराज ! बेरि देख ।

बजू०—अवश्य देखव ।

(धना हथके)

रे रे पुरुष ! के थिक ? एतय कि आयल छी ?

प्रभा—हे प्रभु ! बजनाभ ई सब वार्ता जानल, मोरा त्रास बड़, की होयत सुनु ।

(प्रभावापुक्ति भयानक ॥)

(माला हरि बिनु, मा ॥)

बेहाइला ॥ प्र ॥

की होयत जीव मोरे,
ई सब सुन हमर प्राण थल थल कापे ॥ ध्रु० ॥
सुनल हमे अनेक धोर सोर ।
से सुनि अधिक तरास भेल मोर ॥
ई सब सुनि कए आपलहु तात ।
मोर उधार न करए अपन मात ॥
अवस करए इ नाथक नास ।
हमहु करव तजो पडु सगे पास ॥
जगत प्रकाश नप इ रस गाव ।
चण्डी सेवा बिनु गति नहि पाव ॥

प्रभा०—हे प्राणनाथ ! की उपाय करव ?

प्रद्यु०—हे प्रिये ! त्रास जनु करिए, हमे एक क्षणे सबहि भारव, किन्तु
संवाध भेल, ते मारयिते संकोच होयिछ ।

प्रभा०—हे नाथ ! अपन जीवन रक्षा कर, ई अमोघ छलन ! हमरा बाप के
ब्रह्मा देल, ई लिखो, अपन प्राण रक्षा कर ।

प्रद्यु०—भल, जे इहाक अभिमत ।

(बजनाभ हथके ॥ प्रद्युम्न, गद, शाम्भ देख ॥)

प्रभा०—हे चन्द्रावती, गुणवती ! अन्तःपुर भय रहु ।

उभे—अवश्य ।

(प्रभावती, गुणवती परि विहाय)

मुनाभ, मन्त्री—रे रे पुरुष ! के सोहरा थिक ?

गव—हमरा जायव, हम कृष्णक भाय बगुदेव पुत्र, ई कृष्णक पुत्र
प्रद्युम्न, शाम्भ ।

मुनाभ—सोहे गथार, राजाक अन्तःपुर पैतर छह, आवे कतय जाय छह ?
भारव हे सुनह ।

गव—मुनाभ ! कह ।

(परम हरिते, मा ॥)

परहिया ॥ ए. प्र ॥

तोहे गद शाम्भ छलप बुधि तोह रे ।

पलटि जाह दुहु हमर दरे ॥ मेभासा ॥

हे गद ! तोह सबहि जीव लेप जाह ।

गद, शाम्भ—हे मुनाभ ! गर्व जनु करह, हमर बचन सुनह ।

मुनाभ—गद ! कह ।

(गवोक्ति)

अरे मुनाभ हम सो कि कर गुमान ।

अधे भारवाह हमे तोहे नहि जान ॥ मोय के ॥

बश, मत्त—हे प्रद्युम्न, चाड़ होय, अब कतय जाय छह ?

प्रद्यु०—हमे यार्थ छय ।

(कारि धरिप, मा ॥)

प, रि, ए. प्र ॥

परदुम्न तोहे किंचित मानुषे ।

मोर आशा बिनु पुर रहलाहें सुखे ॥ मेभासा ॥

हे प्रद्युम्न ! अल्प मानुस तोहें हम सोट नहि पारय ।
 प्रद्यु०—हे वज्रनाभ ! तोह देव मानव गंधर्व सबक धैरो, अवश्य मारवाहे
 हमें, सुनह ।
 वज्र०—प्रद्युम्न ! कह ।

(प्रद्युम्नोक्ति)

तोह मारए एहि रहलाय पुर ।
 तोहर काय सो प्राण करय मोए दूर ॥ मेभासा ॥
 हे वज्रनाभ ! एहि खन मारिवाहय ।
 वज्र०—हे प्रद्युम्न ! तोहें हम मारवह, तोहर बाप कृष्ण से नहि हमें
 मारय पार्ता है ।
 प्रद्यु०—हे वज्रनाभ ! हमर बाप कृष्ण से आयलाह, हमें तोह मारवाहे
 (कृष्ण, सारण बचलन बुंहाय)
 (प्रथम कोणे)

कृष्ण—सारण ! जुद्ध देखव ।
 सारण—अवश्य देखव ।

(द्वितीय कोणे)

सारण—हे प्रभु ! त्वराय चलु ।
 कृष्ण—सारण ! चलु ।
 प्रद्यु०—हे तात ! हमर नमस्कार ।
 कृष्ण—शत्रु जिनु ।
 प्रद्यु०—हे तात ! भल भल, एतय विजय कवल अपने ।
 कृष्ण—हे पुत्र ! ई सारङ्ग धनु लियो, शत्रु मारि देवता सबक सान्त्व
 कह ।
 प्रद्यु०—तात ! इहाक आशिषे सब होयत ।
 वज्र०—हे प्रद्युम्न ! तोह कतय जाय, एखने मारव, सुनु ।
 प्रद्यु०—दानव ! कह ।

वज्रनाभ हमें कि करव, तोहें काज ।
 दानव तोह जगपुरि पडाओव आज ॥ मोय के ॥

(भूत परि बुंहाय)

(इयाम दरायलो, मा)

तोहि, वसन्त ॥ सो ॥

मुदिते नाचल भूत डाकिनि परेत पिशाचि ॥ ध्रु० ॥
 करेज घात मामु खाए काचे काचे ।
 इ खाए के आनन्द ते नाचे ॥
 इ सबे पियए लोहु, डाकिनि लोक ।
 हाय पाव खाए गृध शोक ॥

(वैष्णवी, सखी परिबुंहाय)

वैष्णवी—हे सखी ! कोराहल मुनयि छी ।

सखी—जुद्ध होयिछि ।

(वैष्णवी न सोय ॥ शिव, शिव)

(अलङ्कित मा)

मरहयि ॥ लाजति ॥

शिव शिव पट्ट के ई गति भेल ।
 मोरा रतन दैव हरि लेल ॥
 जे हमें मागल सब प्रभु देल ॥
 ऐसने प्राणनाथ अवे दुर लेल ॥
 एहन पति सो भेल वियोग ।
 नासव तनु हमें चित्तव योग ॥
 जगत प्रकाश नृप एहे गाव ।
 हरि सेवा ते निक धाम पाव ॥

प्रद्यु०—हे प्राणनाथ ! की अवस्था ?

१. कोराहल ।

(सुद्धी गायन, तनु काय)

प्रद्युम्न—हे प्रभावती, चन्द्रावती, गुणवती ! एतय आउ ।

प्रभावती चन्द्रा० गुण०—हमर नमस्कार ।

हे ईश्वर ! हमर प्रणाम ।

कृष्ण—हे गद, सारण ! प्रद्युम्न के ई राज्य अभियेक कह ।

गद, सारण—एहुन उचित ।

(प्रद्युम्न रजशभियेक ॥ ववाडा, मा ॥)

भैरवी ॥ ए ॥

मारल असुर देव सबक भेल सुख, सोहे कए उत्तम काजे ।

जावत भानु रह होउ ठाकुर एहे लेउ बैरि क राजे ॥

सबै—जावत धरि चाद सूर्य तावत धरि इहाय राजा, एहि वज्रपुरे ।

सबै—तथास्तु ।

कृष्ण—हे लोके ! देव कार्य भेल, द्वारिका चलु ।

सबै—नाथ ! अवश्य ।

(कृष्णादि निस्सार)

(नो वारान, मा ॥)

तोड़ि ॥ ए ॥

ई हमे जान पुरदुमनका जनम कृतारथ भेला ॥ ध्रु ॥

वज्रनाभ असुर मारि लेल सुन्दरि, इ दानव सब देखि नहि भीति ।

हरख चलह अब द्वारिका पुरि, सुत कएल निक किरति ।

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! पूर्ण मनोरथ भेल, द्वारिका चलु ।

सबै—नाथ ! विजय कर ।

(द्वितीय कोणे)

सबै—ईश्वर ! शीघ्र विजय कर ।

कृष्ण—लोके ! चलु ॥ लु १६ ॥

(रुक्मिणी, सत्यभामा परि दुःहाय)

रुक्मिणी—हे सत्यभामा ! ईश्वर प्रद्युम्न ई प्रभूति कहिया आवत ?

सत्य०—हे रुक्मिणी ! मोर सगुण भेल, आयल प्राय ।

(कृष्णादि सबलन दुःहाय)

(प्रथम कोणे)

कृष्ण—हे लोके ! द्वारिका जायब चलु ।

सबै—ईश्वर ! विजय कर ।

(द्वितीय कोणे)

सबै—हे ईश्वर ! द्वारिका आयिलाहु ।

कृष्ण—लोके ! जरसब कर ।

कृष्ण—हे रुक्मिणी, सत्यभामा !

रुक्मिणी, सत्यभामा—हे प्रभु हमर नमस्कार । एहि आसन विजय कर ।

सबै—प्रिये ! अवश्य ।

सत्य०, चन्द्रा०, गुण०—हे धकुरायिनि ! हमरा नमस्कार ।

कृष्ण—हे प्रिये ! ई प्रद्युम्नक पत्नी प्रभावती, ई गदक पत्नी चन्द्रावती,

ई शाम्बक पत्नी गुणवती, संभाषणा कर ।

रुक्मिणी—हे प्रभावती, चन्द्रावती ! एतय आउ ।

सबै—माता ! अवश्य ।

कृष्ण—हे लोके ! हम ईश्वर भक्त करब ।

सबै—ईश्वर ! जे आशा ।

(कृष्णोक्ति जाति रस ।)

(श्याम बंधु मा ॥)

गौरी पंथम ॥ चौ ॥

मन हमरा एहि भेला ॥ ध्रु ॥

हमे सब जानल संसार असार, सार एक शिव नाम ।

सहे शक शिरे गंगाजल धार, एहि सेवि नहि होए वाम ॥

शिव पद सेवए के न कर विचार हम सेवए एहि ठाम ।
प्रकाश नृपति कहै, तोहें सधार, पूरह मनक काम ॥
कुण्ड-हूँ हविमणी, सत्यभामा ! ईश्वर भक्त पय सार ।
उभे-ईश्वर ! सख ।

कुण्ड-अतः पर देव कार्य कयल, भाव की कर्तव्य ?
प्रद्युम्नावि-सय समीहित सिद्ध भेल, अतः पर ई होअ ।
(प्रद्युम्नोक्ति इत्येक)

फाले वपंतु वासवो वसुमती शस्यादिपूर्णाभवे—
वास्तां भूपतिरेव नित्यविजयो यावदग्रहाधीश्वरम् ।
मावतिष्ठति जाल्लवो हरजटाजूटे समुज्जृम्भतां,
सावद्वीरजगत्प्रकाशनृपतेः कीर्तिः कवित्वोज्ज्वला ॥
सखे-सर्वं सिद्धि होअव ।
प्रद्यु-हे लोके ! ईश्वरीक भक्त कह ।
सखे-अवश्य ।

(शिवनाम मा ॥)
पंचम क्षुमरि ॥

कृपा करह जगत जननि माता ।
तोहें भवानि सय लोक का घाता ॥
खोन सेवक हुने देखि कर कसना ।
कि कह्य माता मोए तोहर गुना ॥
जगत्प्रकाश नृपति कर विवती ।
जनम जनम होइ तोर पद मती ॥

इति श्रीश्री जयजगत्प्रकाशमल्लकृत प्रभावतीहरणनाम नाट्य
समाप्तम् ॥

नेपालाब्दे रसायनाय्ये, गणिते कामनासरे,
आधावे बहुले पक्षे, ग्रन्थः संपुर्णतामयात् ।

